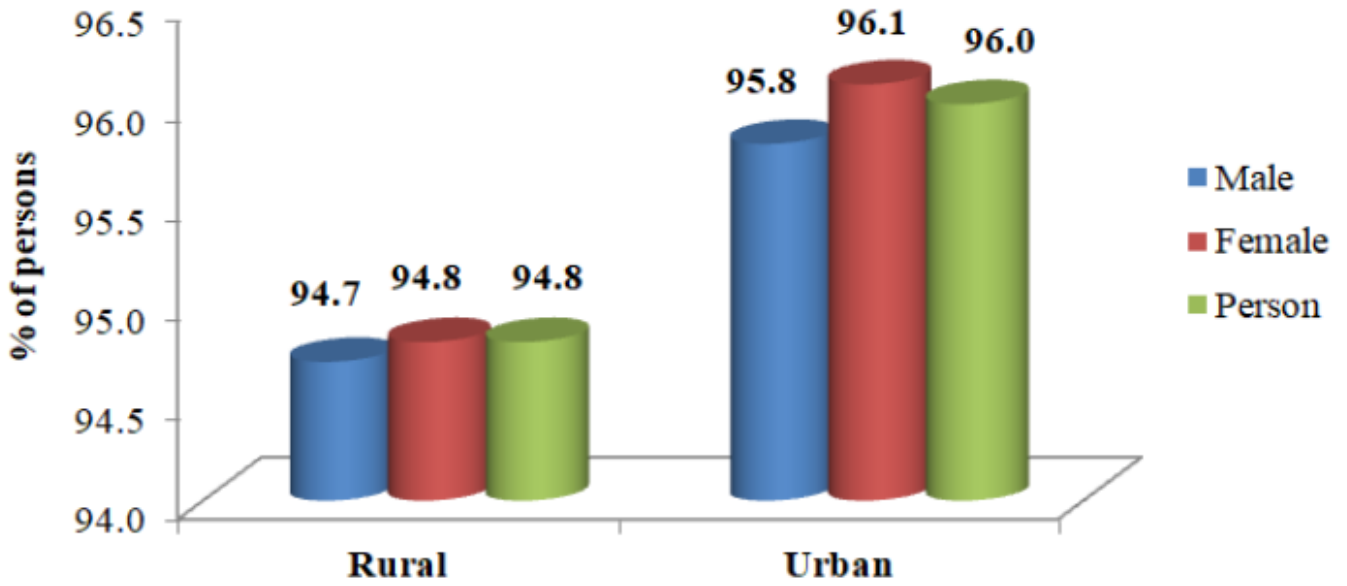


Figure 1: % of persons (aged 15 years and above) aware of Ayush, All-India



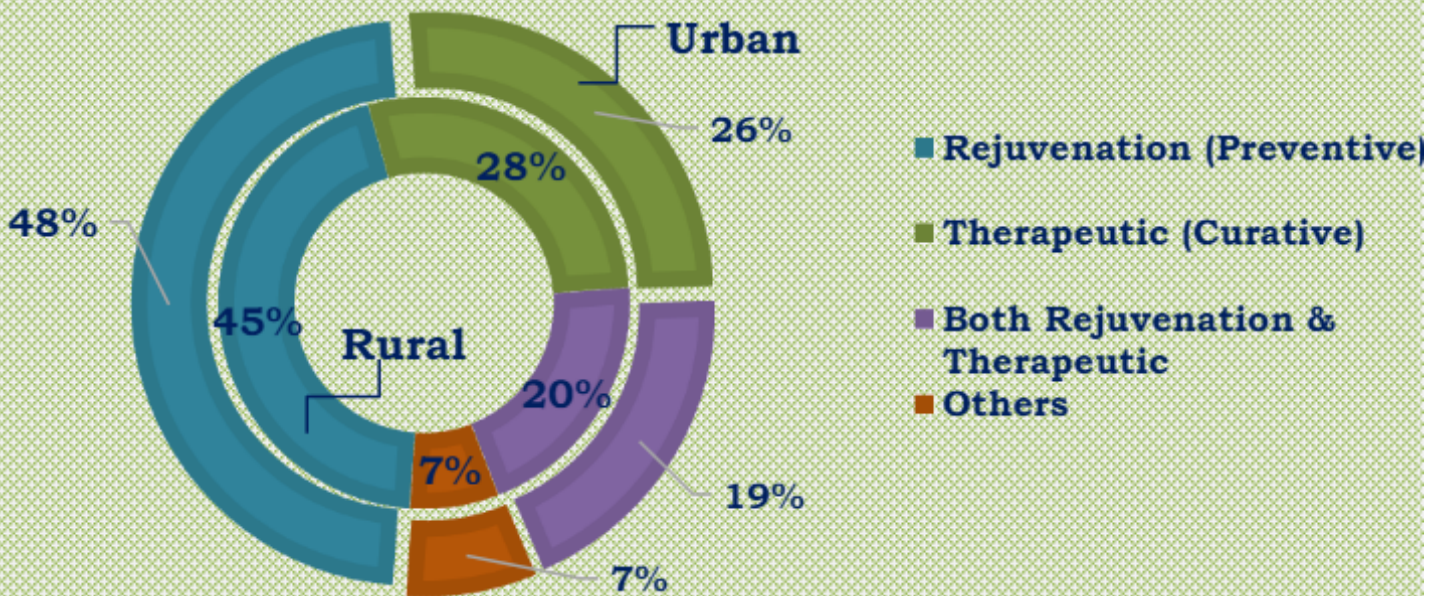
//

■ **AYUSH का अनुप्रयोग:**

- वगित 365 दिनों के दौरान शहरी क्षेत्रों के लगभग 53% लोगों एवं ग्रामीण क्षेत्रों के 46% लोगों ने बीमारियों की रोकथाम या उपचार हेतु आयुष का उपयोग किया है।
- **AYUSH उपचार हेतु किया गया व्यय:**
- बीमारियों की रोकथाम या उपचार के क्रम में AYUSH पद्धतिपर प्रतिव्यक्ति औसत व्यय शहरी क्षेत्रों में 574 रुपए तथा ग्रामीण क्षेत्रों में 472 रुपए था।

■ **उद्देश्यानुसार आयुष प्रणाली का उपयोग:**

Percentage of persons used Ayush by purpose



■ **योगाभ्यास:**

- ग्रामीण भारत में लगभग 1.1 करोड़ परिवारों और शहरी भारत में लगभग 1.4 करोड़ परिवारों में कम-से-कम एक सदस्य नियमित रूप से योग का अभ्यास करता पाया जाता है।

आयुष

- आयुष भारत में प्रचलित चिकित्सा प्रणालियों का संकषिप्त नाम है जैसे:
 - **आयुर्वेद:** समग्र कल्याण पर केंद्रित प्राचीन चिकित्सा प्रणाली।
 - **योग:** शारीरिक मुद्राओं एवं ध्यान के माध्यम से तन, मन और आत्मा का एकीकरण।
 - **प्राकृतिक चिकित्सा:** जल, वायु तथा आहार जैसे तत्त्वों के उपयोग से प्राकृतिक उपचार।
 - **यूनानी:** हास्य सिद्धांत (Humoral Theory) और हर्बल उपचार के उपयोग से संतुलन की स्थापना।
 - **सिद्धि:** पाँच तत्त्वों और ह्यूमर तमलि चिकित्सा का आधार है।
 - **होम्योपैथी:** स्व-उपचार प्रतिक्रियाओं को उत्तेजित करने हेतु धीमी उपचार प्रक्रिया।
- ये प्रणालियाँ **पारंपरिक चिकित्सा दर्शन पर आधारित** हैं और रोगों की रोकथाम तथा स्वास्थ्य संवर्द्धन की स्थापति **अवधारणाओं के साथ स्वस्थ जीवन जीने का एक तरीका प्रस्तुत** करती हैं।
- आयुष मंत्रालय भारत में आयुष की शिक्षा, अनुसंधान और प्रचार-प्रसार के विकास के लिये उत्तरदायी है।



आयुष चिकित्सा पद्धति

आयुष में आयुर्वेद, योग और प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध, सोवा रिग्पा और होम्योपैथी शामिल हैं, आयुर्वेद का 5000+ वर्षों का प्रलेखित इतिहास है।

आयुर्वेद

- संहिता काल (1000 ईसा पूर्व): परिपक्व चिकित्सा प्रणाली के रूप में उभरा
- चरक संहिता: सबसे प्राचीन और आधिकारिक संहिता
- सुश्रुत संहिता: आठ विशिष्टताओं में मौलिक सिद्धांत और चिकित्सीय विधियाँ प्रदान करती है
- मुख्य शाखा:
 - आग्नेय पुनर्वसु- चिकित्सकों की शाखा
 - दिवोदास धन्वतरि - शल्यचिकित्सकों की शाखा

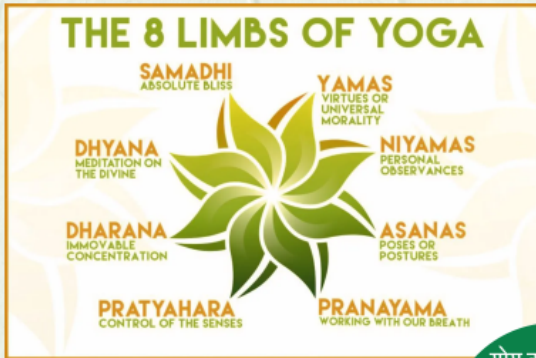
आयुर्वेद की शाखाएँ

- काय चिकित्सा- चिकित्सा।
- शल्य चिकित्सा- सर्जरी।
- शालाक्य तंत्र- ईएनटी और नेत्र विज्ञान।
- बाल रोग चिकित्सा।
- अगद तंत्र- विष विज्ञान।
- भूतविद्या - मनोरोग।
- रसायन- कायाकल्प चिकित्सा और जराचिकित्सा।
- वाजीकरण तंत्र- सेक्सोलॉजी।



भगवान ब्रह्मा को आयुर्वेद का प्रथम प्रवर्तक माना जाता है

योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा



- प्राकृतिक चिकित्सा: 5 प्राकृतिक तत्वों - पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश की सहायता से उपचार
- शरीर की स्व-उपचार क्षमता सिद्धांतों और स्वस्थ जीवन के सिद्धांतों पर आधारित
- रोग-केंद्रित दृष्टिकोण के स्थान पर व्यक्ति-केंद्रित दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करता है

योग को सर्वप्रथम महर्षि पतंजलि ने व्यवस्थित रूप में योगसूत्र के रूप में प्रतिपादित किया

यूनानी

ग्रीस में अग्रणी, अरबों द्वारा 7 सिद्धांतों के रूप में विकसित (उमूर-ए-तब्बिया)

- बुकरात (हिप्पोक्रेट्स) और जालीनूस (गैलेन) की शिक्षाओं के ढाँचे के आधार पर
- चार ह्यूमर्स का हिप्पोक्रेटिक सिद्धांत अर्थात् रक्त, कफ, पीला पित्त और काला पित्त
- WHO द्वारा मान्यता प्राप्त और भारत द्वारा वैकल्पिक स्वास्थ्य प्रणाली के रूप में आधिकारिक दर्जा प्रदान किया गया

सिद्ध

10000 - 4000 ईसा पूर्व; सिद्ध अगस्तियार- सिद्ध चिकित्सा के जनक

- निवारक, प्रोत्साहनात्मक, उपचारात्मक, पुनर्जीवनात्मक और पुनर्वासात्मक स्वास्थ्य देखभाल
- 4 घटक: लैट्रो-रसायन विज्ञान, चिकित्सा अभ्यास, योग अभ्यास और बुद्धि
- 3 निदानात्मक ह्यूमर्स (मुक्कुट्टरम) और 8 महत्वपूर्ण परीक्षणों (एन्वागई थेरवु) पर आधारित है

आयुर्वेद के 3 गुण (त्रिदोष): वात, पित्त और कफ

सोवा रिग्पा

उत्पत्ति: भगवान बुद्ध के समय 2500 वर्ष पूर्व भारत में

- लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश आदि के हिमालयी क्षेत्रों में पारंपरिक चिकित्सा।
- भारतीय चिकित्सा केंद्रीय परिषद् अधिनियम, 1970 (वर्ष 2010 में संशोधित) द्वारा भारत में मान्यता प्राप्त।

होम्योपैथी

जर्मन चिकित्सक डॉ. क्रिश्चियन फ्रेडरिक सैमुअल हैनिमैन ने इसके मूलभूत सिद्धांतों को संहिताबद्ध किया

- जर्मन चिकित्सक डॉ. क्रिश्चियन फ्रेडरिक सैमुअल हैनिमैन ने इसके मूलभूत सिद्धांतों को संहिताबद्ध किया।
- औषधियाँ मुख्यतः प्राकृतिक पदार्थों (पौधे उत्पाद, खनिज, पशु स्रोत) से तैयार की जाती हैं।
- वर्ष 1810 में यूरोपीय मिशनरियों द्वारा भारत में लाया गया; वर्ष 1948 में आधिकारिक मान्यता प्रदान की गई।
- 3 प्रमुख सिद्धांत:
 - सिमिलिया सिमिलिबस क्यूरेंटूर ("समः समम् शमयति" या "समरूपता")
 - सिंगल मेडिसिन
 - मिनिमम डोज़



भारत में आयुष को बढ़ावा देने से संबंधित सरकारी योजनाएँ क्या हैं?

- केंद्र परायोजति योजनाएँ:

◦ **राष्ट्रीय आयुष मशिन:**

- इसे भारत में पारंपरिक और लागत प्रभावी आयुष चिकित्सा प्रणाली को बढ़ावा देने के लिये वर्ष 2014 में लॉन्च किया गया था।
- यह आयुष में बुनियादी ढाँचे के विकास को मज़बूत करने, शिक्षा और अनुसंधान को बढ़ावा देने के साथ गुणवत्ता नियंत्रण पर केंद्रित है।

■ **केंद्रीय क्षेत्रक योजनाएँ:**

◦ **आयुर्ज्ञान:**

- इस योजना का उद्देश्य आयुष में शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देना है और इसे वित्त वर्ष 2021-22 से वित्त वर्ष 2025-26 की अवधि के लिये अनुमोदित किया गया है।
- इसमें दो घटक शामिल हैं: आयुष पेशेवरों के लिये प्रशिक्षण प्रदान करने और ज्ञान अंतराल को पाटने हेतु आयुष में क्षमता निर्माण एवं सतत चिकित्सा शिक्षा (Continuing Medical Education- CME) तथा आयुष प्रणालियों में अनुसंधान का समर्थन करने के लिये आयुष में अनुसंधान एवं नवाचार, राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों से जुड़े प्राथमिकता वाले क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करना।

◦ **आयुर्वेदस्वास्थ्य:**

- आयुर्वेदस्वास्थ्य (AYURSWASTHYA) योजना के उत्कृष्टता केंद्र कार्यक्रम के तहत आयुष में काम करने वाले संगठनों और संस्थानों को फंड दिया जाता है। इस फंड से उन्हें अपनी सुविधाओं, शोध तथा समग्र संचालन को बेहतर बनाने में मदद मिलती है।

◦ **चैपयिन सेवा क्षेत्र योजना:**

- इसका उद्देश्य भारत में चिकित्सा पर्यटन को बढ़ावा देना है। यह आयुर्वेद और योग जैसी पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियों को बढ़ावा देने से कहीं आगे है।
- इस योजना का उद्देश्य भारत में इन अद्वितीय स्वास्थ्य देखभाल विकल्पों की तलाश करने वाले अंतरराष्ट्रीय रोगियों, पर्यटकों और आगंतुकों को आकर्षित करना भी है।

◦ **आयुष में अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देना:**

- इसका उद्देश्य आयुष चिकित्सा पद्धतियों के बारे में जागरूकता और रुचि को बढ़ावा देना, मज़बूत करना तथा आयुष के अंतरराष्ट्रीय प्रचार, विकास एवं मान्यता को सुवर्धन बनाना है।

◦ **आयुष औषधि गुणवत्ता एवं उत्पादन संवर्धन योजना:**

- इसका उद्देश्य भारत में आयुष औषधियों की गुणवत्ता एवं वननिर्माण को उन्नत करना है, जिससे वे अधिक सुरक्षित, अधिक विश्वसनीय बन सकें तथा सम्भवतः विश्वभर में निर्यात की जा सकें।

◦ **औषधीय पौधों का संरक्षण, विकास एवं सतत प्रबंधन:**

- इसका उद्देश्य औषधीय पौधों का संवर्धन, खेती और संरक्षण करना है।
- आयुष मंत्रालय द्वारा स्थापित राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड का उद्देश्य औषधीय पौधों की वृद्धि और खेती को समर्थन देना तथा वभिन्न मंत्रालयों, विभागों तथा संगठनों के बीच विकास प्रयासों का समन्वय करना है।

आयुष से संबंधित अन्य योजनाएँ

- [आयुष क्षेत्र पर नए पोर्टल](#)
- [आयुष उद्यमिता कार्यक्रम](#)
- [आयुष वेलनेस सेंटर](#)
- [ACCR पोर्टल और आयुष संजीवनी एप](#)
- [आयुष समग्र वेलनेस सेंटर \(AYUSH HWC\)](#)

दृष्टिभेन्स प्रश्न

प्रश्न. भारत में नविकरक स्वास्थ्य सेवा को बढ़ावा देने और पारंपरिक स्वास्थ्य सेवा प्रणालियों पर बोझ को कम करने में आयुष चिकित्सा प्रणालियों की भूमिका पर चर्चा कीजिये। समग्र स्वास्थ्य सेवा दृष्टिकोण के लिये आयुष की शक्तियों को तथा अधिक एकीकृत करने एवं उनका लाभ उठाने के उपाय सुझाइये।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न (PYQ)

??????

प्रश्न. भैषजिक कंपनियों के द्वारा आयुर्विज्ञान के पारंपरिक ज्ञान को पेटेंट कराने से भारत सरकार किस प्रकार रक्षा कर रही है? (2019)

